SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 3, Issue-4, July-Aug-Sept. : 2025
Published by Rangmati Publication https://www.rangmatipublication.com

भील जनजाति की परंपराओं और इतिहास

डॉ. मेहुल एफ. मालिवाड़

1.सारांश

भील जनजाति की समृद्ध परंपराओं और इतिहास को समझने के लिए कई महत्वपूर्ण पुस्तकें और शोध ग्रंथ उपलब्ध हैं। यदि आप अकादमिक या गहरे शोध (Research) के उद्देश्य से इन पुस्तकों को खोज रहे हैं , तो निम्नलिखित संदर्भ पुस्तकें सबसे प्रामाणिक मानी जाती हैं:

2. परिचय

भील जनजाति भारत की सबसे प्राचीन और तीसरी सबसे बड़ी आदिवासी जनजाति है। इनका इतिहास वीरता , प्रकृति प्रेम और विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान से भरा हुआ है। "भील" शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के 'बिल्लू' शब्द से हुई है , जिसका अर्थ है 'धनुष'। इन्हें 'भारत का धनुष पुरुष' भी कहा जाता है।

यहाँ भील आदिवासियों की प्रमुख परंपराओं और संस्कृति का विस्तृत विवरण दिया गया है:

3. सामाजिक संरचना और जीवनशैली

भील समाज पितृसत्तात्मक होता है, लेकिन महिलाओं को समाज में बहुत सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त है।

- पाल और फला: भीलों के गाँवों को 'पाल' कहा जाता है और इनके घरों को 'कु' कहा जाता है। छोटे गाँवों या मोहल्लों को 'फला' कहते हैं।
- गमेती: भील समाज के मुखिया को 'गमेती' कहा जाता है, जिसका निर्णय सामाजिक विवादों में अंतिम माना जाता है।
- अतिथि सत्कार: ये अपने मेहमानों का स्वागत बहुत ही आत्मीयता से करते हैं। 'केसरिया बालम' की भावना इनके स्वभाव में रची-बसी है।

4. प्रमुख त्यौहार और मेले

भील संस्कृति में मेलों का बहुत महत्व है, जो केवल मनोरंजन नहीं बल्कि सामाजिक मिलन का केंद्र होते हैं।

- बेणेश्वर मेला: इसे 'आदिवासियों का महाकुंभ' कहा जाता है। यह राजस्थान के डूंगरपुर जिले में सोम, माही और जाखम नदियों के संगम पर आयोजित होता है।
- भगोरिया हाट: यह भीलों का सबसे प्रसिद्ध उत्सव है, जो होली के समय मध्य प्रदेश के झाबुआ और धार क्षेत्रों में मनाया जाता है। यह प्रेम और जीवनसाथी चुनने के अनूठे अवसर के रूप में भी जाना जाता है।
- होली: भीलों के लिए होली सबसे बड़ा त्यौहार है। इस दौरान 'गैर' नृत्य और पारंपरिक गीतों की गूँज रहती है।

5. विवाह की अनूठी परंपराएँ

भील समाज में विवाह को लेकर कई लचीली और प्रगतिशील परंपराएँ प्रचलित हैं:

- दापा प्रथा: इसमें दूल्हे पक्ष द्वारा वधू पक्ष को कन्या का मूल्य (आर्थिक सहायता के रूप में) दिया जाता है।

- गोल गधेड़ो: यह एक साहसिक परंपरा है जिसमें युवक को एक खंभे पर चढ़कर गुड़ या नारियल हासिल करना होता है, जबकि युवतियां उसे रोकती हैं। सफल होने पर उसे अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार मिलता है।
- विवाह के प्रकार: इनमें 'हरण विवाह' (भागकर शादी), 'सेवा विवाह' और 'विनिमय विवाह' जैसे स्वरूप भी देखने को मिलते हैं।

6. लोक नृत्य और संगीत

संगीत भीलों की आत्मा है। इनके वाद्य यंत्रों में ढोल, मांदल, बाँसुरी और थाली प्रमुख हैं।

- गवरी नृत्य: यह मेवाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नाट्य है, जो रक्षाबंधन के बाद 40 दिनों तक चलता है। यह शिव और भस्मासुर की कथा पर आधारित है।
- घूमर और गैर: पुरुष और महिलाएँ पारंपरिक वेशभूषा में हाथ में डंडे लेकर 'गैर' नृत्य करते हैं।

7. कला: पिथोरा पेंटिंग

भील जनजाति की सबसे बड़ी पहचान उनकी 'पिथोरा' चित्रकला है।

- यह केवल सजावट नहीं, बल्कि एक धार्मिक अनुष्ठान है।
- इसमें घोड़ों, पक्षियों और प्रकृति के चित्रों के माध्यम से अपने देवताओं (पिथोरा देव) को प्रसन्न किया जाता है।
- भूरी बाई इस कला की विश्व प्रसिद्ध कलाकार रही हैं।

8. धार्मिक मान्यताएँ

भील प्रकृति पूजक होते हैं। वे जल, जंगल और ज़मीन को ईश्वर का स्वरूप मानते हैं।

- ये महादेव (शिव) के अनन्य भक्त होते हैं।
- टोटमवाद: प्रत्येक कुल का एक पवित्र चिह्न (पेड़ या पशु) होता है जिसे वे 'टोटम' कहते हैं और उसकी रक्षा करते हैं।
- ऋषभदेव (केसरिया जी) को ये 'काला जी' के रूप में पूजते हैं।
- *बाबा देव* (बाबा डूंगर देव) का *इतिहास* मुख्य रूप से *भील जनजाति* की मौखिक परंपराओं, लोक मान्यताओं और प्राचीन प्रकृति-पूजा से जुड़ा है। कोई लिखित प्राचीन ग्रंथ या राजकीय इतिहास इसमें नहीं मिलता, क्योंकि भील समाज सदियों से मौखिक कहानियों, गीतों और बड़वाओं (ओझाओं) की परंपरा पर निर्भर रहा है।
  यह *भील जनजाति का सर्वप्रथम या प्रमुख देवता* माना जाता है — कई स्रोतों में इसे *भीलों का सबसे प्राचीन और सर्वोच्च लोक देवता* कहा गया है।

9. खान-पान और वेशभूषा

- भोजन: मक्का की रोटी और प्याज की चटनी इनका मुख्य भोजन है। उत्सवों पर 'राबड़ी' और 'मोयड़ी' बनाई जाती है। महुआ के फूलों से बनी पारंपरिक मदिरा का सांस्कृतिक महत्व है।
- पहनावा: पुरुष 'पोत्या' (साफा) और धोती पहनते हैं। महिलाएँ गहरे रंगों के घाघरे, ओढ़नी और चांदी/पीतल के भारी आभूषण पहनती हैं।

10.निष्कर्ष

भील आदिवासियों की परंपराएँ आधुनिकता की दौड़ में भी अपनी मौलिकता को बचाए हुए हैं। उनकी सादगी, ईमानदारी और प्रकृति के प्रति समर्पण आज के समाज के लिए एक महान सीख है। वे केवल एक जनजाति नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर के सजग प्रहरी हैं।

क्या आप चाहते हैं कि मैं भील समुदाय की 'भगोरिया' परंपरा या 'पिथोरा कला' के बारे में और अधिक विस्तार से जानकारी दूँ?

11. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. The Bhils: A Study | टी.बी. नायक (T.B. Naik) | भीलों की सामाजिक संरचना और रीति-रिवाजों पर सबसे प्रामाणिक शोध। |
2. The Bhils of Ratanmal | वाई.वी.एस. नाथ (Y.V.S. Nath) | भीलों के वंश, कुल और परिवार नियोजन की पारंपरिक प्रणालियों का विवरण। |
3. भील: एक अध्ययन | डॉ. राघवैया | भीलों के ऐतिहासिक संघर्ष और उनकी पहचान पर केंद्रित। |
4. Tribal Heritage of India | एस.सी. दुबे (S.C. Dube) | भारत की जनजातियों में भीलों के सांस्कृतिक योगदान का वर्णन। |
5. मेवाड़ की भील संस्कृति": यह पुस्तक राजस्थान के भीलों, उनके 'गवरी' नृत्य और लोक कलाओं पर विस्तार से प्रकाश डालती है।
6. झाबुआ के भील": मध्य प्रदेश के झाबुआ और धार क्षेत्र की 'भगोरिया' परंपरा और 'पिथोरा' चित्रकला को समझने के लिए यह एक बेहतरीन स्रोत है।
7. Wild Tribes of Central India" (1882): मैल्कम (Malcolm) द्वारा लिखित यह पुस्तक ब्रिटिश काल के दौरान भीलों की जीवनशैली का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।
8. पिथोरा कला पर पुस्तकें: मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय (Bhopal) द्वारा प्रकाशित विभिन्न कैटलॉग और पुस्तकें, जिनमें भूरी बाई और पेमा फाल्या जैसे कलाकारों के योगदान का उल्लेख है।
9. भीली लोकगीत संग्रह: राजस्थान और गुजरात साहित्य अकादमियों द्वारा भीली बोलियों और उनके लोकगीतों पर कई संकलन प्रकाशित किए गए हैं।
10. जनजातीय अनुसंधान संस्थान (TRI), उदयपुर और भोपाल की वार्षिक पत्रिकाएँ।